प्रश्न :-
अतिथि तुम कब जाओगे ? का पाठ सार 80-100 शब्द में लिखो :-

उत्तर> भारतीय संस्कृति की यह मान्यता है कि अतिथि भगवान समान होते हैं। इसलिए कहा जाता है कि अतिथि देवो भवः। पर अगर अतिथि हमारे घर ज्यादा समय तक रुकें तो वह देवता से दानव बन जाते है। इसके साथ साथ हम अतिथि से उब जाते है। ऐसा ही कुछ लेखक के साथ भी हुआ था।
लेखक के घर पर वह मेहमान आए तो वे बहुत खुश हुए। पर वे चार से अधिक दिन तक

पर पर टिके रहे। लेखक कहते हैं कि उनका बटवा भी अब काँपने लगा है। वह अतिथि के सामने दिनाँक बदलते रहे। और तो और उनकी सारी बातें भी ~~समाप्त~~ समाप्त हो गई। लेखक उन्हें शुरुआत में अत्यंत पकवान ले दिये पर अब वह उन्हें सादि खिचड़ी देने वाले थे। वे उन्हें फिल्म भी लेकर गए पर अब उन्हें पर पर ही बिठाकर रखा। लेखक मन में बार-बार मन में सिर्फ यही कहते है कि अतिथि, तुम कब जाओगे ?

— X —